तीर्थक्षेत्रोंकी महिमा एवं दुर्दशा : खण्ड १

तीर्थक्षेत्र एवं तीर्थयात्रा का महत्त्व

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

एवं सद्गुरु डॉ. चारुदत्त प्रभाकर पिंगळे

राष्ट्रीय मार्गदर्शक, हिन्दू जनजागृति समिति

सनातन संस्था

卐 **सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या** 卐

मराठी ३४५, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९९, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ५४, तमिल ४४, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

अगस्त २०२४ तक ३६६ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९७ लाख ३३ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्यका संक्षिप्त परिचय

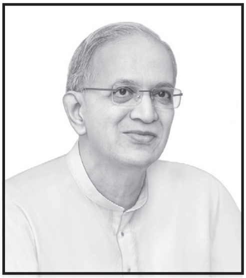

१. अध्यात्मप्रसारार्थ ‘सनातन संस्था’की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए ‘गुरुकृपायोग’ साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से २६.७.२०२४ तक १२८ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४० साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. देवता, साधना, राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिंदुत्वनिष्ठ नियतकालिक ‘सनातन प्रभात’के संस्थापक-संपादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) स्थापनाका उद्घोष (वर्ष १९९८)

६. ‘हिन्दू राष्ट्र’की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तरपर मार्गदर्शन !

७. भारतीय संस्कृतिके वैश्विक प्रसार हेतु ‘भारत गौरव पुरस्कार’ देकर फ्रांसके संसदमें सम्मान (५ जून २०२४)

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ – जयंत बाळाजी आठवले
१७·५·१९९८

सद्‌गुरु डॉ. चारुदत्त पिंगळे, एमएस (ईएनटी)

सद्‌गुरु डॉ. चारुदत्त पिंगळेजी ‘हिन्दू जनजागृति समिति’के राष्ट्रीय मार्गदर्शक हैं तथा भारत एवं नेपाल में हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना हेतु हिन्दू-संगठन कर रहे हैं । आपके नेतृत्वमें प्रतिवर्ष गोवामें ‘वैश्विक हिन्दू राष्ट्र महोत्सव’ आयोजित किया जाता है । आप सनातनके अनेक ग्रन्थोंके संकलनकर्ता भी हैं ।

अनुक्रमणिका

(अध्यायके कुछ विशेषतापूर्ण शीर्षक नीचे दिए हैं ।)

अध्याय १ : तीर्थक्षेत्रोंकी सामान्य जानकारी ११

१. तीर्थ २. तीर्थक्षेत्र ११

४. श्मशान, घर, तीर्थक्षेत्र, सन्तोंके आश्रम इत्यादि में त्रिगुणोंकी मात्रा २७

६. पुण्यक्षेत्रोंकी विशेषताएं, प्रमुख कार्य, कार्यरत शक्ति व प्रमुख योगमार्ग ३१

९. अन्य पन्थियोंके तीर्थक्षेत्र और हिन्दुओंके तीर्थक्षेत्र ३९

अध्याय २ : तीर्थक्षेत्रोंका निर्माण ४१

१. तीर्थक्षेत्र कैसे बनते हैं ? ४१

२. तीर्थक्षेत्रोंके शोधकर्ता भगवान परशुराम ! ४१

४. सन्त, गुरु, सद्‌गुरु के निवास-स्थानका वातावरण तीर्थक्षेत्र बनना ४२

५. सन्त व ऋषि-मुनियों की तपश्चर्याके कारण पावन तीर्थक्षेत्र बनना ४२

६. ८० टक्के आध्यात्मिक स्तरके सन्तोंके स्थान ४२

७. पुण्यवान व्यक्ति एवं सन्तोंके समाधिस्थान ४३

८. धर्मकार्य करनेवाली समाजव्यवस्था ही तीर्थक्षेत्र बनना ४३

अध्याय ३ : तीर्थक्षेत्रोंका महत्त्व ४४

१. चैतन्य २. पापमुक्ति ३. चित्तशुद्धि ४. सत्संग ४४

८. तीर्थक्षेत्रोंके सन्दर्भमें भारतका महत्त्व ४७

अध्याय ४ : तीर्थक्षेत्रोंकी विशेषताएं ५०

१. तीर्थक्षेत्रकी मिट्टीमें अनिष्ट शक्तियोंको नष्ट करनेकी क्षमता होना ५०

२. ग्रहणके समय किया तीर्थस्नान भी पुण्यकारक माना जाता है ५०

अध्याय ५ : तीर्थक्षेत्रोंके सन्दर्भमें सन्तोंका महत्त्व ५२

२. ज्योतिर्लिंग और सन्तोंके समाधिस्थलका महत्त्व ५३

७. सन्तोंका तीर्थयात्रा करनेका उद्देश्य ५४

८. अवतारी सिद्धपुरुषोंका तीर्थक्षेत्रको जागृत रखना ५५

१०. सन्त और गुरु तीर्थक्षेत्रोंसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण ५६

अध्याय ६ : तीर्थयात्रा ६०

२. तीर्थयात्राका महत्त्व ५. लाभ ७. यात्रा-विधान ६०

८. यात्राका वास्तविक उद्देश्य साध्य करनेके लिए क्या करें ? ७२

अध्याय ७ : तीर्थयात्रासे अधिक महत्त्वपूर्ण है साधना ! ७७

२. तीर्थयात्राकी मर्यादा तथा नामसाधनाकी अनिवार्यता ७७

६. मनके सारे विकार और नकारात्मकता नष्ट कर,
निर्मल अन्त:करणसे तीर्थक्षेत्रमें जाना आवश्यक ! ८०

卐 **संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी** ८२

टिप्पणी : विषय पूर्ण होनेकी दृष्टिसे ग्रन्थमें अन्य सन्दर्भग्रन्थोंसे तथा लेखनसे कुछ सूत्र लिए हैं । ऐसे सूत्रोंके अन्तमें कोष्ठकमें छोटे आकारमें सन्दर्भक्रमांक लिखे गए हैं एवं उसका विवरण ग्रन्थके अन्तमें संदर्भसूचीमें दिया गया है ।

भूमिका

‘तरति पापादिकं यस्मात्’, अर्थात जो पापोंसे तारता है, उसे ‘तीर्थ’ कहते हैं । वास्तवमें तीर्थक्षेत्र केवल पापोंसे नहीं तारते, अपितु सभीसे अर्थात (भवसागरसे भी) तारते हैं । इसलिए उनके महत्त्वका वर्णन युगों-युगोंसे हो रहा है । तीर्थक्षेत्र मानवजातिका उद्धार करनेवाले परमस्थान हैं । इसीलिए हिन्दू धर्म और संस्कृति में तीर्थक्षेत्र एवं तीर्थयात्रा का महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

तीर्थक्षेत्रकी पूर्वपीठिका सहस्रों वर्ष पुरानी है, इसलिए उनका चैतन्य शाश्वत और चिरन्तन रूपमें ही कार्यरत रहता है । तीर्थक्षेत्रोंमें सम्बन्धित देवताका वास होता है । इसलिए वहां चैतन्य अधिक रहता है । वहां उपासना करनेपर भक्तोंकी सब कामनाएं अल्प समयमें पूर्ण होती हैं । तीर्थक्षेत्रमें देवताके अस्तित्व और चैतन्य से मानवको लाभ हो और उसमें सत्त्वगुण बढे, इसीलिए ईश्वरने तीर्थक्षेत्र बनाए हैं ।

तीर्थक्षेत्र समस्त मानवजातिको ईश्वरीय ऊर्जा, चैतन्य, आनंद और शान्ति प्रदान करनेवाले तथा भक्तिभाव बढानेवाले आध्यात्मिक केन्द्र ही हैं । मानवकी पारमार्थिक उन्नति हेतु सहायक वातावरण सरलतासे उपलब्ध करानेवाले इन तीर्थक्षेत्रोंमें ईश्वरका नित्य और निरन्तर ध्यान-स्मरण किया जा सकता है । इसलिए तीर्थक्षेत्र केवल पर्यटनके क्षेत्र नहीं, अपितु समस्त मानवजातिके लिए अतिवन्दनीय और पवित्र क्षेत्र भी हैं । इसीलिए इस ग्रन्थमें तीर्थक्षेत्रोंका महत्त्व विशद किया गया है । तीर्थक्षेत्रोंका निर्माण, उनका महत्त्व, विशेषताएं आदि विषयोंका विवेचन किया गया है। इसी प्रकार इस ग्रन्थमें विविध उदाहरण देकर तीर्थक्षेत्रोंके सन्दर्भमें सन्तोंका महत्त्व भी समझाया गया है ।

तीर्थक्षेत्रगमन भी एक प्रकारकी ‘साधना’ है । इसके लिए तीर्थक्षेत्रमें जानेपर भावपूर्ण तीर्थस्नान करना, देवताओंके दर्शन करना, दान-धर्म करना, उपास्यदेवताका नामजप करना आदि विविध प्रकारसे अधिकाधिक समय ईश्वरके स्मरणमें रहना अपेक्षित है । ऐसा करनेपर ही तीर्थयात्राका

आध्यात्मिक स्तरपर लाभ होता है । इसके अतिरिक्त, ‘और क्या करनेपर तीर्थक्षेत्रोंसे अधिकाधिक लाभ मिलेगा’, यह आपको इस ग्रन्थसे सीखनेके लिए मिलेगा । इसके साथ ही तीर्थयात्राका महत्त्व, तीर्थयात्रा करनेके लाभ, तीर्थयात्राका वास्तविक उद्देश्य साध्य होनेके लिए क्या करें आदि बातोंकी जानकारी इस ग्रन्थमें मिलेगी ।

यह ग्रन्थ पढनेसे तीर्थक्षेत्रोंका महत्त्व सबको ज्ञात हो, इस धरापर स्थित तीर्थक्षेत्ररूपी श्रेष्ठ स्थानोंकी अनुभूति होनेके लिए सबमें साधना करनेकी प्रबल इच्छा जाग्रत हो और तीर्थक्षेत्रोंसे वास्तविक लाभ हो, जिससे सबमें भक्तिभाव बढे, यह ईश्वरसे प्रार्थना ! – **संकलनकर्ता**

पाठकोंके लिए सूचना

कुछ सूत्रोंके अन्तमें लिखा है – ‘सन्दर्भ : अज्ञात’ । ये सूत्र विविध धार्मिक ग्रन्थ, सन्त अथवा अध्यात्मके अधिकारी व्यक्तियोंके नियतकालिक इत्यादि से लिए हैं । ऐसे सूत्रोंका सन्दर्भ पाठकोंको ज्ञात हो तो हमें सूचित करें ।

सनातनके ग्रन्थोंमें उपयोग की गई संस्कृतनिष्ठ हिन्दी भाषाकी कारणमीमांसा

१. सनातनके ग्रन्थोंमें शुद्ध (संस्कृतनिष्ठ) हिन्दीका उपयोग किया जाता है। पाठकोंकी सुविधाके लिए कठिन शब्दोंके आगे कोष्ठकमें वैकल्पिक अन्य भाषाके शब्दका उल्लेख किया जाता है।

२. हिन्दी राष्ट्रभाषा होनेके कारण विविध प्रान्तोंमें एक ही अर्थमें एकसे अधिक शब्द प्रचलित होते हैं। अनेक बार शब्दकी वर्तनीमें अंतर होता है। इन कारणोंसे पाठकोंको भाषा कठिन अथवा अशुद्ध प्रतीत न हो, इस हेतु ग्रन्थमें विभिन्न स्थानोंपर हमने कोष्ठकमें वैकल्पिक शब्द देनेका प्रयास किया है; तथापि पृष्ठसंख्या बढनेके भयसे प्रत्येक बार ऐसा करना सम्भव नहीं।

– (सच्चिदानंद परब्रह्म) डॉ. जयंत आठवले